साप्ताहिक

जागत गाँव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 08-15 मई, 2023, वर्ष-9, अंक-4 | भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित | पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

एफसीआई ने लेने से किया इंकार, भीगा गेहूं सुखाने की हो रही कोशिश

जहां बारिश, वहां खरीदी बंद! छह संभागों में 11 हजार टन गेहूं तरबतर

» सीधे सेंट्रल पूल में गेहूं देने की तैयारी, 26 लाख टन गेहूं देना है निगम को

» समर्थन मूल्य पर खरीदकर खुले में रखा गेहूं भीगा, मांगी रिपोर्ट

» 55 लाख टन गेहूं की खरीदी, 50.18 लाख टन गोदामों में पहुंचा

भोपाल। जागत गांव हमार

बे-मौसम की बारिश समर्थन मूल्य पर राज्य सरकार द्वारा खरीदे गए गेहूं को भिगोकर मुश्किल खड़ी कर दी है। इसी साल नई स्कीम बनी है, जिसके तहत खरीदी के तुरंत बाद गोदामों के बाहर से भारतीय खाद्य निगम को सेंट्रल पूल का 26 लाख टन गेहूं देना है। सोसायटियों ने इसके लिए गेहूं खरीद कर बाहर ही रख लिया था, जो बारिश में भीग गया है। प्रदेश के छह संभागों जबलपुर, नर्मदापुरम, इंदौर, सागर, भोपाल और उज्जैन में 10 हजार 972 टन गेहूं को नुकसान पहुंचा है। अनुमान के मुताबिक इसका मूल्य करीब 22 करोड़ से अधिक है। अब खाद्य विभाग इसे सुखाने में जुटा है। एफसीआई को कहा गया कि सूखने के बाद वह गेहूं उठा, लेकिन उसने ऐसा करने से मना कर दिया। लिहाजा दो दिन पहले निकले आदेश के तहत गोदामों में रखा गेहूं ही एफसीआई को सेंट्रल पूल के लिए देना तय हुआ है। गोदाम संचालक इसे लेकर नाराज हैं, क्योंकि यदि गोदाम से गेहूं निकला तो उनके वेयरहाउस खाली हो जाएंगे। आय नहीं होगी। बहरहाल, जहां गेहूं भीगा है, उन 200 खरीद केंद्रों पर इस आशंका में खरीदी रोक दी गई है कि फिर गेहूं न भीगे।

कहां कितना भीगा गेहूं

सिवनी	3,263
उज्जैन	3,151
होशंगाबाद	2,479
जबलपुर	1079
सतना	600
पन्ना	162
सागर	70
मंडला	50
इंदौर	48
रायसेन	37
भोपाल	25
दमोह	08

आंकड़े टन में

50 लाख टन गेहूं गोदामों में पहुंचा

मध्य प्रदेश में बेमौसम हुई वर्षा से समर्थन मूल्य पर उपार्जन करके खरीदी केंद्रों पर खुले में रखा गेहूं भीग गया। कुछ स्थानों पर पानी भर गया। इससे गेहूं को नुकसान पहुंचने की आशंका है। इसे देखते हुए नागरिक आपूर्ति विभाग ने सभी जिलों से रिपोर्ट मांगी है। अभी तक प्रदेश में 55 लाख 59 हजार 617 टन गेहूं खरीदा जा चुका है। इसमें से 50 लाख 18 हजार 89 टन गेहूं गोदामों में सुरक्षित रखा जा चुका है। यही कारण है कि इस बार अब तक 50 लाख टन गेहूं गोदामों में पहुंच चुका है।

कलेक्टर रद्द कर सकेंगे खरीदी

प्रदेश में वर्षा की स्थिति को देखते हुए सरकार ने कलेक्टरों को उपार्जन केंद्रों पर गेहूं खरीदने का कार्य स्थगित करने का अधिकार दे दिया है। उपार्जन कार्य स्थगित होने से जिन किसानों से खरीदी नहीं की जा सकेगी, उन्हें फिर से स्लाट बुक करने की सुविधा दी जाएगी। उपार्जन केंद्र पर गेहूं के सुरक्षित भंडारण की जिम्मेदारी संबंधित संस्था की होगी। खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग ने कलेक्टर को निर्देश दिए हैं कि उपार्जित गेहूं को वर्षा से बचाने के लिए सभी कदम उठाए जाएं।

यह थी योजना

एबीसी मोड की स्कीम बनी। ए-यानी गोदाम पर ही गेहूं खरीदकर सीधा एफसीआई के सेंट्रल पूल में भेजना। बी- पुराने गेहूं को निकालकर दूसरी जगह के वेयरहाउस में शिफ्ट करना। सी- गोदाम से सीधा रैक में पहुंचाना।

गेहूं उपार्जन के बाद भंडारण के लिए परिवहन कराने के निर्देश दिए हैं। कुछ स्थानों पर रखे गेहूं के भीगने की सूचना प्राप्त हुई है। सभी जिलों से रिपोर्ट मांगी गई है। साथ ही यह भी कहा गया है कि खुले में जो भी गेहूं रखा है, उसे तिरपाल से ढंककर रखा जाए। उपार्जन केंद्रों में पानी जमा न हो, इसकी व्यवस्था की जाए ताकि खरीदे गए गेहूं को नुकसान न हो।

दीपक सक्सेना, संचालक नागरिक आपूर्ति विभाग

उज्जैन जिले में बारिश से गेहूं की उपज को हुआ नुकसान | उज्जैन। तीन दिन रुक रुककर हुई बरसात के कारण समर्थन मूल्य पर खरीदा गेहूं भारी मात्रा में खराब हुआ। कलेक्टर ने जिले की बड़नगर, खाचरौद एवं तराना तहसील की कुछ संस्थाओं पर रखे गेहूं की नुकसानी का आकलन करने के निर्देश संबंधित तहसीलदार, सहायक खाद्य अधिकारी और सहकारिता निरीक्षक को दिए हैं। कहा है कि यदि समिति स्तर पर गेहूं बरसात के कारण खराब होना पाया जाता है तो समस्त जिम्मेदारी संस्था प्रबंधक की होगी।

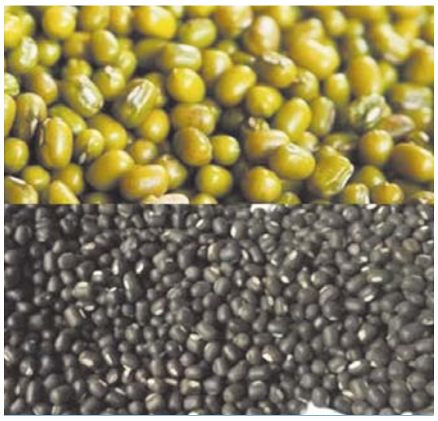

खरीदी का पंजीयन 8 से 19 मई तक

प्रदेश के 32 जिलों में मूंग 10 में उड़द खरीदेगी सरकार

भोपाल। किसान-कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री कमल पटेल ने कहा है कि प्रदेश में विपणन वर्ष 2023-24 में मूंग और उड़द की समर्थन मूल्य पर खरीदी के लिए 8 मई से पंजीयन शुरू होगा। किसान भाई 19 मई तक ग्रीष्मकालीन मूंग और उड़द फसलों का पंजीयन करवा सकेंगे। सरकार ने उड़द का समर्थन मूल्य 6600 रुपए और मूंग का समर्थन मूल्य 7755 रुपए प्रति क्विंटल तय किया है। इस भाव में किसान अपनी फसल बेच सकेंगे। मंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं। मंत्री ने बताया कि प्रदेश के मूंग के अधिक उत्पादन वाले 32 जिलों में नर्मदापुरम, नरसिंहपुर, रायसेन, हरदा, सीहोर, जबलपुर, देवास, सागर, गुना, खंडवा, खरगोन, कटनी, दमोह, विदिशा, बड़वानी, मुरैना, बैतूल, श्योपुरकलां, भिंड, भोपाल, सिवनी, छिंदवाड़ा, बुरहानपुर, छतरपुर, उमरिया, धार, राजगढ़, मंडला, शिवपुरी, अशोकनगर, बालाघाट और इंदौर में पंजीयन केन्द्र खोले जा रहे हैं। इसी प्रकार उड़द के अधिक उत्पादन वाले 10 जिलों जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, दमोह, छिंदवाड़ा, पन्ना, मंडला, उमरिया, सिवनी एवं बालाघाट में किसानों के पंजीयन के लिए केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं।

सीएम बोले-विकास के साथ जनता का जीवन बदलना ही लक्ष्य, लिफ्ट इरिगेशन के लिए 25 करोड़ स्वीकृत

किसानों ने किया आय दोगुनी होने का करतल ध्वनि से समर्थन

भोपाल। जागत गांव हमार

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि राज्य सरकार विकास और जन-कल्याण की योजनाओं से जनता की जिंदगी बदलने का अभियान चला रही है। राज्य शासन की कृषि और किसानों के हित की योजनाओं से जहां कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है वहीं किसानों की आय भी दोगुनी हुई है। उपस्थित हजारों किसानों ने हाथ हिलाकर और ताली बजा कर समर्थन किया। मुख्यमंत्री सीहोर जिले के बुधनी जनपद के नांदनेर ग्राम में 128 करोड़ की लागत की 6 सड़क का भूमि-पूजन कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने दर्जनों गाँव में नर्मदा नदी से लिफ्ट इरिगेशन योजना के लिए 25 करोड़ रुपए प्रदान करने और महाराणा प्रताप की भव्य प्रतिमा स्थापित कराने की घोषणा भी की। मुख्यमंत्री ने कहा कि वे आज प्रदेश के विभिन्न अंचल में करीब 2000 बेटियों के विवाह में वर्चुअल शामिल होकर आशीर्वाद देकर आ रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि नांदनेर के पास बोरना गांव में उन्होंने मित्रों के सहयोग से पहली बार गरीब कन्याओं का विवाह करवाया था और मुख्यमंत्री बन कर उन्होंने गरीब परिवारों की बेटियों की शादी की योजना को मूर्त रूप दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि लाड़ली लक्ष्मी योजना से सरकार ने बेटियों को वरदान बनाया और उनकी शिक्षा की जिम्मेदारी भी ली है।

नांदनेर मेरी जन्म-भूमि

मुख्यमंत्री ने कहा कि नांदनेर उनकी जन्म-भूमि है और मुख्यमंत्री के रूप में आपका बेटा आपका नाम दुनिया में रोशन कर रहा है। लोगों की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव लाना ही राज्य सरकार का लक्ष्य है। आज क्षेत्र में सड़कों का जो जाल बिछा है उसे और भी सघन किया जाएगा। सिंचाई सुविधा से किसान अब मूंग की तीसरी फसल भी ले रहे हैं। सरकार ने किसानों को उनकी उपज का पूरा मूल्य देकर उनकी आय को दोगुना किया है। किसानों ने मुख्यमंत्री के इस कथन का करतल ध्वनि से समर्थन किया। मुख्यमंत्री ने नांदनेर में सेवा सहकारी और उचित मूल्य दुकान का भवन निर्माण, अनुसूचित जाति बस्ती में मंगल भवन और नर्मदा घाट के मरम्मत कार्य को स्वीकृत करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने दो निराश्रित बच्चों के लिए मुख्यमंत्री बाल आशीर्वाद योजना से छात्रवृति स्वीकृत करने की घोषणा भी की। सांसद रमाकांत भार्गव ने क्षेत्र के चहुंमुखी विकास के लिए मुख्यमंत्री का अभिनंदन किया।

केंद्रीय कृषि मंत्री बोले- नई पीढ़ी को खेती की ओर आकर्षित करने, किसानों का मुनाफा बढ़ाना सरकार का संकल्प

वो दिन दूर हुए जब किसान को खेती में घाटा होने की वजह से आत्महत्या जैसा कदम उठाना पड़ता था

भोपाल। जागत गांव हमार

भारत सरकार का जोर नई पीढ़ी को खेती की ओर आकर्षित करने तथा किसानों का मुनाफा बढ़ाने पर है। विगत कुछ सालों में भारत सरकार इस विषय पर काम किया हैं, जिसके सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं। अब किसान खेती को घाटे का नहीं लाभ का सौदा मान रहा हैं। वो दिन दूर हुए जब किसान को खेती में घाटा होने की वजह से आत्महत्या जैसा कदम उठाना पड़ता था। खेती-किसानी की नई-नई तकनीक और फसल का वाजिब दाम मिलने से देश का किसान खुशहाली की ओर कदम बढ़ा रहा है। यह बात केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने श्रीराम कॉलेज ऑफ कामर्स की दी मार्केटिंग सोसायटी द्वारा आयोजित मार्केटिंग समिट को संबोधित करते हुए कही। केंद्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि भारत की दो प्रधानता है-कृषि और धर्म। धर्म का आशय यहां पूजा पद्धति से नहीं,

बल्कि जिम्मेदारी ही धर्म है। प्रकृति में प्रत्येक जीव का धर्म होता ही है। विद्यार्थियों-शिक्षकों का भी एक-दूसरे के प्रति धर्म होता है। माता-पिता, परिवार, मित्र, स्कूल-कालेज, प्रदेश-देश के प्रति जिम्मेदारी के भाव का धर्म धारण कर जीवन जीने से उसकी सार्थकता सिद्ध होती है, अन्यथा परिणाम नहीं मिलता। किसी भी विद्यार्थी की ग्राह्यता बहुत अच्छी होने पर व्यवहार में उसे सफलता मिलती ही है। इस प्रधानता को स्वीकार करके आगे बढ़ने पर सद्परिणाम आते ही हैं। हमारे वीर शहीदों ने अपना धर्म निभाया, इसी तरह सेना अत्यंत कठिन परिस्थितियों में देश की सीमाओं की रक्षा का धर्म जज्बे से निभाती है। इसी प्रकार, कृषि हमारी प्रधानता है, जिसकी बहुत महत्ता है। यदि आपके पास पैसा है और खाने के लिए उत्पादों की कमी है तो कैसे काम चलेगा, इसलिए हमारे किसान भाई-बहन अभिनंदनीय है, जो अपनी आजीविका तो कमा ही रहे हैं, पूरे देश के प्रति खाद्यान्न की उपलब्धता के साथ अपना धर्म निभा रहे हैं।

विद्यार्थी समग्र कृषि को समझने के लिए पूसा सहित देश के अन्य संस्थानों का करें दौरा

कृषि को और अच्छा करने की जरूरत

तोमर ने कहा कि कृषि क्षेत्र, अन्यों के मुकाबले लंबे समय तक उपेक्षित रहा, लेकिन यह रीढ़ की तरह है, जिसके साथ हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के ताने-बाने को मुगल व अंग्रेज भी नहीं तोड़ सकें। कोविड सहित पहले भी प्रतिकूल परिस्थितियों में कृषि क्षेत्र ने देश में अपनी सार्थकता सिद्ध की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सशक्त नेतृत्व में भारतीय कृषि की अहमियत और भी बढ़ गई है। भारत अब मांगने वाला देश नहीं है, बल्कि देने वाला देश बन गया है, दुनिया के अनेक देशों की हमसे अपेक्षाएं बढ़ गई हैं, उनके लिए भी हमें अपनी कृषि को और अच्छा करने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी किसानों सहित कृषि क्षेत्र को हमेशा प्रोत्साहन देते हैं और इसे बेहतर करने पर उनका पूरा जोर है, इसलिए एक के बाद एक अनेक ठोस योजनाएं भी बनाकर क्रियान्वित की जा रही है। सरकार ने कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए टेक्नालाजी का उपयोग भी सुनिश्चित किया है। करोड़ों किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत छह-छह हजार रुपए वार्षिक उनके बैंक खातों में पूरी पारदर्शिता के साथ जमा कराए जा रहे हैं। इस रूप में अभी तक ढाई लाख करोड़ रुपए जमा कराए जा चुके हैं, जो पूरे के पूरे किसानों को मिले हैं। कार्यक्रम में कॉलेज की प्राचार्य प्रो. सिमरत कौर ने केन्द्रीय मंत्री तोमर को स्मृति चिन्ह भेंट किया। सूर्यप्रकाश व राम मार्केटिंग सोसायटी के अध्यक्ष श्री जय अंबानी, सचिव तनिष्क ने तोमर का स्वागत किया।

-सागर जिले को सर्वाधिक 26 करोड़ रुपए

प्रदेश के 36 जिलों के 1.48 लाख किसानों को सरकार ने दी 160 करोड़ रुपए राहत

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रदेश में तीन दौर में ओलावृष्टि और बेमौसम बारिश से खराब हुई रबी फसलों के नुकसान की राहत राशि का सरकार ने वितरण किया। प्रदेश के 36 जिलों के 1 लाख 48 हजार किसानों के खातों में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने समत्व भवन से 159 करोड़ 52 लाख राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से ट्रांसफर की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को संकट से पार ले जाने में वे कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। प्रदेश में सबसे ज्यादा राहत राशि सागर जिले में 26.50 करोड़ किसानों को ट्रांसफर की गई। इसके बाद निवाड़ी जिले के किसानों को 19 करोड़ और दतिया, शिवपुरी और छतरपुर के किसानों के खाते में 12-12 करोड़ समेत अन्य जिलों के किसानों के खातों में राशि का वितरण किया गया। सरकार ने बारिश में खराब फसलों के सर्वे कर राहत राशि बांटने का निर्णय लिया था। सीएम ने कहा कि सरकार संकट की घड़ी में

किसानों के साथ खड़ी है। सीएम ने कहा कि मध्य प्रदेश एकमात्र ऐसा राज्य है, जहां फसलों का नुकसान होने पर किसानों को सबसे ज्यादा राहत राशि प्रदान की जाती है।

बीमा का लाभ मिलेगा

सरकार किसानों को फसल कटाई प्रयोग के आधार पर फसल बीमा योजना का लाभ भी दिलाएंगी। सीएम ने कहा कि जहां भी फसलों को नुकसान हुआ है। वहां सर्वे कर राहत राशि प्रदान की जाएगी।

कर्ज वसूली स्थगित

सरकार ने बारिश से फसलों को नुकसान होने से प्रभावित किसानों से कर्ज वसूली स्थगित की है। ऐसे किसानों के घर बेटी की शादी होने पर 55 हजार रुपए की सरकार अलग से मदद करेगी। गेहूं की समर्थन मूल्य पर खरीदी चल रही है। बारिश के कारण गेहूं की चमक चली गई है तो सरकार चमक विहीन गेहूं भी खरीदेगी।

क्षति का होगा आकलन फिर मिलेगी राहत राशि

मध्यप्रदेश में बारिश से केले की फसल भी हो गई बर्बाद

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में पिछले दिनों ओलावृष्टि और वर्षा से ग्रीष्मकालीन मूंग के साथ केले की फसल को भी नुकसान पहुंचा है। बुरहानपुर सहित अन्य क्षेत्रों में केले की फसल प्रभावित हुई है। पूर्व मंत्री अर्चना चिटनीस ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात कर प्रभावित किसानों को राहत उपलब्ध कराने का अनुरोध किया था। राजस्व विभाग ने सर्वे के निर्देश दे दिए हैं। क्षति का आकलन करने के बाद प्रभावित किसानों को राहत राशि उपलब्ध कराई जाएगी। प्रदेश के बुरहानपुर सहित निमाड़ क्षेत्र में किसान केले की फसल बड़े पैमाने पर होती है। तेज हवा के साथ वर्षा और ओले गिरने से फसल बर्बाद हो गई। खेत में फसल बिछ गई।

किसानों को बड़ा नुकसान हुआ है। पूर्व मंत्री अर्चना चिटनीस ने मुख्यमंत्री से मिलकर उन्हें पूरी स्थिति बताई और सर्वे कराकर प्रभावित किसानों को राहत उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। मुख्यमंत्री के निर्देश पर राजस्व विभागों ने कलेक्टरों को निर्देश दिए हैं कि संयुक्त सर्वे दल बनाकर प्राथमिकता के आधार पर क्षति का आकलन कराकर प्रतिवेदन भेजा जाए ताकि प्रभावित किसानों को राहत उपलब्ध कराई जा सके।

चना सुरक्षित, गेहूं भीगा

बारिश के दौरान प्रदेश में उपार्जन का काम बंद रहा है। इसलिए अधिकांश खरीदी केंद्रों पर खुले में गेहूं नहीं उपलब्ध रहा। बावजूद इसके बरौदा कालाडूमर जैसे भी अनेक केंद्र रहे, जहां हजारों क्विंटल गेहूं खुले में पड़ा और पूरी तरह से तर-ब-तर हो गया।

कृषि मंत्री कमल पटेल ने संगठनों के कार्यालयों का किया शुभारंभ, बोले

एफपीओ से किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण का खुलेगा द्वार

भोपाल। जागत गांव हमार

किसान-कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री कमल पटेल नेसतना जिले के मैहर में मैहर कृषक उत्पादक संगठन एवं मझगवाँ के ग्राम पगारकलां में गैवीनाथ सब्जी एवं दुग्ध उत्पादक संगठन के कार्यालयों का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार एफपीओ से कृषकों के आर्थिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त कर रही है। सांसद गणेश सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, जन-प्रतिनिधि और ग्रामीणजन उपस्थित रहे। कृषि मंत्री ने कहा कि कृषक उत्पादक संगठनों (एफपीओ) द्वारा संबद्ध कृषकों को कृषि के लिये बेहतर संसाधन उपलब्ध कराने का कार्य किया जा रहा है। एफपीओ कृषकों को बेहतर, गुणवत्तापूर्ण बीज, खाद, दवाई इत्यादि की व्यवस्था करने के साथ उपज की मॉर्केटिंग की व्यवस्था भी करते हैं। प्रदेश में निरंतर एफपीओ का गठन किया जा रहा है। मैहर में गठित एफपीओ निश्चित ही किसानों के लिए फायदेमंद होगा।

किसानों को मदद मिलेगी- कृषि मंत्री ने मझगवां में गैवीनाथ सब्जी एवं दुग्ध उत्पादक संगठन कार्यालय का शुभारंभ करते हुए कहा कि समूह के गठन से किसानों को मदद मिलेगी। किसानों को सब्जी एवं दूध की तकनीकी जानकारी मिलने से उत्पादन बढ़ेगा। क्षेत्र में पैक्ड दूध, क्रीम, मक्खन, दही, पनीर, कस्टर्ड, फ्रोजन सब्जियों के संबंध में नवीनतम जानकारियां मिलेंगी, जिससे किसान अपने उत्पादों का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकेंगे।

किसानों को मिल रही सब्सिडी

कृषि मंत्री ने किसानों के हित में केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं से अवगत कराया। सरकार ने प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना से गांव में रहने वाले लोगों को उनके मकान का मालिकाना हक प्रदान किया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना से किसानों को सीधे लाभान्वित किया जा रहा है। किसानों को खाद एवं बिजली बिलों में बड़े स्तर पर सब्सिडी उपलब्ध कराई जा रही है। सरकार किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

प्रदेश में भेड़ व बकरी और भैंसों की संख्या में इजाफा

घट रहीं गाय

दूध उत्पादन में मुरैना, मांस उत्पादन में भोपाल निकला आगे

भोपाल। जागत गांव हमार

जैव विविधता में पशुओं की अपनी भागीदारी है। हमारा पशुपालन और पशु चिकित्सा विज्ञान अपने आप में विविधता, समानता, समावेशिता को लिए हुए है। सबसे ज्यादा विविधता भरा काम पशु चिकित्सा का है। इस विधा में चूहे, बिल्ली से लेकर शेर, हाथी तक का इलाज किया जाता है। समाज का हर तबका, हर समुदाय, स्त्री, पुरुष, बच्चे, बुजुर्ग सभी किसी न किसी रूप में अपने पशुओं से स्नेह और पशुपालन व्यवसाय के कारण पशु चिकित्सकों से जुड़े ही होते हैं। पशुपालन से जुड़े इस काम में मप्र की भागीदारी भी अहम है। मप्र में अच्छी खासी संख्या विभिन्न पशुओं की है। इस व्यवसाय से जुड़े लोगों की आजीविका का माध्यम भी यही जानवर होते हैं। देश में पशु गणना हर पांच साल में होती है। 2012 के बाद 2019 में हुई पशु गणना के आंकड़े बताते हैं। कि मप्र में गौवंशीय पशु यानि गाय, बैल की संख्या घटी है। जबकि भेड़, बकरी, भैंस की तादाद में काफी इजाफा दर्ज किया गया है।

दूध उत्पादन में टॉप-5 जिले

जिला	दूध उत्पादन	जिला	दूध उत्पादन
मुरैना	914.49	बुरहानपुर	91.07
उज्जैन	692.04	अनूपपुर	106.57
इंदौर	680.50	डिंडोरी	107.78
रीवा	621.85	उमरिया	126.88
देवास	608.80	मंडला	149.55

आंकड़े टन में, 2021-22 की जानकारी के अनुसार

भारत सबसे बड़ा दूध उत्पादक

भारत आज पूरे विश्व में सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन कर रहा है। हमारे देश का दुग्ध उत्पादन पिछले वर्षों में 5.29 प्रतिशत बढ़ा है और कुल उत्पादन के हिसाब से प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता 444 ग्राम प्रतिदिन है, जो कि दुनिया के औसत से लगभग 100 ग्राम अधिक है। दिन-प्रतिदिन लाइवस्टॉक सेक्टर का भारतीय अर्थव्यवस्था में दिए जा रहे योगदान का प्रतिशत बढ़ रहा है। ग्रामीण परिवेश में विशेषकर भूमिहीन और कम जमीन रखने वाले पशुपालकों के लिए पशुपालन आज भी एक चुनिंदा व्यवसाय है। साल 2014 से लेकर आज तक पशुपालन का कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट 7.93 प्रतिशत है। यह कृषि क्षेत्र में 4.94 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। मुर्गी पालन, बकरी पालन, शूकर पालन, डेयरी उद्यमिता, चारा विकास, गोबर-गोमूत्र, पंचगव्य उत्पाद इत्यादि एक बड़ा और विविधता पूर्ण उद्यमिता को दर्शाता है।

पशु का विवरण	पशुओं की संख्या (2012)	पशुओं की संख्या (2019)	अंतर
गौवंशीय पशु	1,87,50,828	1,96,02,366	4.34 फीसदी
भैंस वंशीय पशु	1,03,07,131	81,87,989	25.88 फीसदी
भेड़ा, भेड़ी	3,24,585	3,08,953	5.06 फीसदी
बकरे, बकरियां	1,10,64,524	80,13,936	38.07 फीसदी
घोड़े, घोड़ियां	13,260	18,803	29.48 फीसदी
खच्चर	2,543	6,989	63.61 फीसदी
गधे	8,135	14,916	45.46 फीसदी
ऊंट	1,753	3,422	48.77 फीसदी
सुअर	1,64,616	1,75,253	-6.07 फीसदी
कुल पशुधन	4,06,37,375	3.63,32,627	

अंड़ा प्रोडक्शन में जबलपुर अव्वल

पशुपालन विभाग से मिली जानकारी बताती है कि मप्र में सबसे ज्यादा अंडा उत्पादक जिला जबलपुर है। जबलपुर में 9077.73 लाख अंडों का उत्पादन पिछले साल हुआ। दूसरे नंबर पर भोपाल में 5225.13 लाख, तीसरे नंबर पर छिंदवाड़ा में 779.39 लाख, राजगढ़ में 765.22 लाख और बड़वानी 757.13 लाख अंडों का उत्पादन हुआ। अंडा उत्पादन में दतिया (25.13), भिंड (26.18), अशोकनगर (36.14), नीमच(40.05), मुरैना (56.34) लाख अंडों का उत्पादन हुआ। ये पांच जिले सबसे पीछे हैं।

प्रदेश के बड़े शहरों में मांस की खपत ज्यादा

मप्र के बड़े शहरों में मांस की खपत सबसे ज्यादा है। मप्र में 127.05 टन मांस का उत्पादन होता है। सबसे ज्यादा 16.03 टन मांस का उत्पादन भोपाल में होता है। जबलपुर में 13.16, इंदौर में 11.18, देवास में 6.80, विदिशा में 4.26 टन मांस का उत्पादन होता है।

हर व्यक्ति कहीं ना कहीं पशु और पशु उत्पादों से, उनके बाजार मूल्यों से, दूध-दही घी अंडे से और उसके बाजार भाव से प्रभावित प्रभावित होता है। हमारा कोई भी समाज हो उसका त्यौहार बिना दूध-दही, घी, पनीर, खोवा, मक्खन के संभव नहीं। इसलिए हम सभी पशु चिकित्सकों का दायित्व हमारी जिम्मेदारी समाज के हर वर्ग के लिए है। दूध और अंडे प्रोटीन का बेहतरीन विकल्प हैं।

डॉ. उमा कुमरे, अतिरिक्त उप संचालक, पशुपालन विभाग

आईआईएसईआर के रसायन विज्ञान विभाग के विज्ञानियों ने किया शोध

आईसर के वैज्ञानिकों ने खोजी जल शुद्धीकरण की सस्ती तकनीक

भोपाल। आज हम सभी के लिए शुद्धता काफी मायने रखती है। चाहे यह भोजन की हो या हवा और पानी की। इन्हीं में से एक जल की शुद्धता को लेकर काम किया है भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) के वैज्ञानिकों ने। इन्होंने जल को साफ और शुद्ध बनाने के लिए एक ऐसी क्रिस्टलीय नैनो छिद्रयुक्त जैविक झिल्ली तैयार की है, जो पानी में मौजूद सूक्ष्मतम जैविक प्रदूषकों को हटाने में भी कारगर है। यह झिल्ली जल के हानिकारक तत्वों को आकार के आधार पर छानकर बाहर कर देती है। प्रदूषकों सहित घुलनशील रसायन, उर्वरक आदि के कणों को भी पृथक कर देगी। वैज्ञानिको के अनुसार इसके उपयोग का दायरा बेहद बड़ा है। इस झिल्ली का उपयोग औद्योगिक, विज्ञान के क्षेत्र में भी किया जा सकेगा। यह शोध आईआईएसईआर भोपाल के रसायन विज्ञान विभाग के सह प्राध्यापक डॉ. अभिजीत पात्रा के नेतृत्व में छात्र अर्कप्रभ गिरि, जी श्रीराज और तापस कुमार दत्ता ने किया है। डेढ़ से दो साल के अथक शोध के बाद यह परिणाम सामने आया है। इस अध्ययन को जर्मनी की अनुसंधान पत्रिका एन्जेवेन्डे केमी जर्नल में भी प्रकाशित किया गया है।

ऐसी है यह झिल्ली

वैज्ञानिकों के अनुसार, इस झिल्ली में बेहद सूक्ष्म छिद्र हैं। इन छिद्रों का व्यास मनुष्य के बाल की मोटाई से एक लाख गुना तक कम है। यह 1.3 नैनो मीटर से बड़े अणुओं को पानी से अलग कर देती है। इसका परीक्षण नैनो-फिल्टरेशन तकनीक से कुछ चुने गए विषाक्त आर्गेनिक सूक्ष्म प्रदूषकों को अलग करने के लिए किया गया, जिसमें यह प्रभावी साबित हुआ। इसे बनाने में केज (पिंजरे) मालीक्यूल का उपयोग किया गया है। यह पिंजरे जैसी जैविक संरचनाओं और पोर वाले बड़े पालीमर फ्रेमवर्क होते हैं। आसान शब्दों में कहें तो इन अणुओं की संरचना पिंजरे के समान होती है, इसलिए इन्हें यह नाम दिया गया है। इन केज अणुओं से अन्य अणुओं या आयनों को अलग-अलग करने के लिए बेहतर झिल्ली बनाई जा सकेगी।

यह शोध बहुत ही कारगर साबित होगा। आगे संशोधन के साथ इस झिल्ली का उपयोग घरेलू से लेकर औद्योगिक क्षेत्र में भी किया जा सकता है।
- डॉ. अभिजीत पात्रा, सह प्राध्यापक, आईआईएसईआर

इस अनुसंधान के परिणाम हमारे देश के लिए समयोचित और वर्तमान जरूरत के अनुरूप हैं। अगले चरण में उद्योग जगत के सहयोग से परिणामों को वास्तविक जीवन में लागू करने पर विचार किया जाएगा।
- प्रो. शिवा उमापति, निदेशक, आईआईएसईआर, भोपाल

पोषक अनाज (श्री अन्न) (मिलेट्स का डाइटः यही है राईट)

डा. विषाखा सिंह

विषय वस्तु विषेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, रांची (झारखण्ड)

भारतीय हिंदू परंपरा में अयुर्वेद में मोटे अनाज का जिक्र मिलता है। भारत में 60 के दशक के पहले तक मोटे अनाज की खेती की परम्परा थी। हरित क्रांति के आगाज के साथ चावल-गेहूं की अधिक पैदावार वाली किस्मों का प्रचलन बढ़ने से मोटे अनाजों की उपेक्षा हुई। जिसकी वजह से उनका उत्पादन काफी प्रभावित हुआ है । भारत सरकार ने मोटे अनाज की उपयोगिता को देखते हुए मार्च 2021 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रस्ताव पेश किया, जिसके तहत वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष घोषित किया गया है। इस प्रस्ताव को 70 से अधिक देशों की सर्म्थन मिला।

मोटे अनाज की भारत में हिस्सेदारी: मोटे अनाज के उत्पादन में भारत दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। 2020-21 में भारत पूरे विश्व का 41: (30.464 मिलियन टन) मोटे अनाज का उत्पादन किया। जो 2021-22 में 27: के ग्रोथ के साथ 15.92 मिलियन टन पहुंच गया। जिसमें प्रमुख राज्य राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात तथा मध्यप्रदेश है। भारत से मोटे अनाज आयात करने वाले प्रमुख देश इंडोनेशिया, बेल्जियम, जापान, जर्मनी, मेक्सिको, इटली, अमेरिका, ब्रिटेन, ब्राजील, नीदरलैण्ड प्रमुख रूप से हैं। वर्तमान में भारत में उगाई जाने वाली तीन प्रमुख मोटे अनाज वावली फसलें ज्वार, बाजरा और रागी है। छोटे मिलेट फसलों में कोदो, कुटकी, सोवा, सामा, कंगनी, कुट्टु आदि की खेती होती है। मोटे अनाज की खेती में पानी की खपत करीब 30 फीसदी कम हो जाती है, यूरिया व अन्य केमिकल की जरूरत नहीं पड़ती। यह पर्यावरण के लिए भी बेहतर है और ये अनाज जल्दी खराब भी नहीं होते है।

मोटे अनाज व उनके फायदे निम्नलिखित है

बाजरा: बाजरा का ग्लाइसिमिक इन्डेक्स कम होता है, जिसके कारण यह मधुमेह रोग में बेहतर विकल्प है यह कोलेस्ट्राल हृदय रोग आदि को भी नियंत्रित करता है। शोध में पाया गया है कि बाजरे की प्रोटीन रक्त शर्करा के स्तर में सुधार करने में योगदान करता है। बाजरा में खनिज लवण जैसे आयरन, कैल्शियम, मैंगनीशियम, विटामिन आदि अधिक मात्रा में पाया जाता है। जिससे हड्डियां मजबूत बनती है। खून की कमी दूर होती है।

रागी: रागी भारतीय मूल का उच्च पोषक तत्व वाला अनाज है। इसमें कैल्शियम की भरपूर मात्रा होती है। प्रति 100 ग्राम रागी में 344 मिलीग्राम कैल्शियम होता है। बच्चों के विकास के लिए इसका सेवन बेहतर विकल्प है। यह आयरन का भी अच्छा स्रोत है। मैनुपोज के बाद महिलाओं में खून की कमी हो जाती है। ऐसे में रागी का सेवन अत्यधिक लाभकारी होता है। आस्टियोपोरोसीस या हड्डियाँ कमजोर होने की स्थिति में (खासकर बुजुर्गों व महिलाओं में) रागी का सेवन अत्यधिक लाभकारी साबित हुआ है।

ज्वार: अपने धीरे स्र्टाच, पाच्यत हेतु प्रसिद्ध ज्वार, रेशे तथा थाइमिन, राइबोफ्लेविन, फोलिक एसिड आदि सहित विटामिन 'बी' का भी अच्छा स्रोत है। इसमें पोटेशियम, फॉस्फोरस,कैल्शियम अच्छी मात्रा में तथा आयरन व जिंक र्प्यास मात्रा में पाए जाते हैं। इसके सेवन से जीवनशैली संबंधी विकारों की रोकथाम की जा सकती है। ज्वार में प्रति रोधी स्टार्च प्रचुर मात्रा में होने के कारण बृहदांत्र (कोलन) के स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायता करता है तथा मोटापे से संबंधित जटिलताओं की रोकथाम भी करता हैं जि सकी वहज से कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता है। इसके फाइटोन्यूट्रिएन्ट और एन्टीऑक्सीडेन्ट से भरपूर होने के कारण रक्तचाप तथा हृदय रोगियों के साथ-साथ मधुमेह संबंधित जटिलताओं में लाभकारी है।

मक्का: मक्के में रेशे की मात्रा अधिक होती है और यह ग्लूटेन फ्री भी होता है जिसकी वजह से खाने को अच्छी तरह पचाने में यह मदद करता है। यह शरीर में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करता है। मक्के में फोलिक एसिड अच्छी मात्रा में उपलब्ध होता है जो गर्भवती महिलाओं के लिए बहुत ही आवश्यक है। मक्के के आटे में विटामिन ए और कैरोटिनॉइड भरपुर मात्रा में मौजूद होते हैं।

कुटकी: कुटकी प्रोटीन तथा वसा का अच्छा एवं पथ्य रेशे का उत्कृष्ट स्रोत है। कुटकी में आयरन, मैग्नीशियम तथा जिंक खनिज पोषक तत्व भी पाए जाते हैं। कुटकी को हाइपोग्लाइसेमिक तथा हाइपोलिपिडेमिक के रूप में जाना जाता है। कुटकी का मुख्य रूप में पकाए हुए चावल तथा इडली, डोसा आदि अन्य किण्वित उत्पाद के रूप में सेवन किया जाता है।

कंगनी: इसमें चावल की तुलना में ज्यादा प्रोटीन होता है। इसमें खनिज भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। टाइप 2 मधुमेह एवं हृदय संबंधी रोगों की रोकथाम में इसका कम ग्लाइसेमिक सूचकांक तथा उच्च रेशे की मात्रा अत्यंत लाभकारी है। कंगनी में उपस्थित फाइटोरसायन मुख्य कण सफाई गुणों (फ्री रेडिकल स्कैवेंजिग प्रापर्टीज) के कारण कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं।

चेना: चेना में पथ्य रेशे तथा पालीफिनॉल्स प्रचुर मात्रा में होते हैं। अध्ययन दर्शाते हैं कि चेना में एचडीएल स्तर बढ़ाकर कोलेस्ट्रॉल चयापचय नियंत्रित करना, यकृत क्षति से सुरक्षा सहित कई स्वास्थ्य लाभ हैं तथा टाइप 2 मधुमेह, मोटापे हेतु इसके लाभकारी प्रभाव हैं। इसके अलावा इसमें लेसिथिन की उच्च मात्रा के कारण इसका सेवन तंत्रि क स्वास्थ्य लाभ के लिए भी किया जाता है।

कोदो: कोदो आसानी से पचता है तथा पारंपरिक रूप से इसका चावल के रूप में सेवन किया जाता है। इडली, डोसा, रोटी, सूप आदि बनाने में भी इसका उपयोग किया जाता है। इसमें लेसिथिन उच्च मात्रा पाया जाता है, अत: तंत्रिका तंत्र को मजबूती प्रदान करने हेतु पूरक के रूप में इसका उपयोग किया जा सकता है। कोदो के फिनॉलिक्स फाइटीरसायन की प्रति ऑक्सीकारक गतिविधियाँ हृदय संबंधी रोगों तथा उच्च रक्तचाप कम करने, घेंघा रोग, सांस फूलने की बीमारी के साथ मानव स्वास्थ्य पर लाभकारी प्रभाव डालता है।

सावां: सावां प्रोटीन, पथ्य रेशे तथा मैग्नीशियम, आयरन तथा जिंक साहित खनिज पोषक तत्ववों का उत्कृष्ट स्रोत है। आयरन तथा जि ंक की उच्च मात्रा होने के कारण यह अनाज गर्भवती एवं दूध पिलाने वाले महिलाओं के लिए उपयुक्त आहार हैं। इसमें उपस्थित फिनॉलिक्स फाइटोरसायनों की प्रचुर मात्रा के कारण प्रति - ऑक्सीकारक, कैंसर-रोधी (एंटी कार्सिनॉजेनिक), सूजन /जलावरोधी, सूक्ष्मजीवरोधी गतिविधियों सहित मानव स्वास्थ्य पर कई लाभदायक प्रभाव दिखाई देते हैं। मोटे अनाजों की पोषक संरचना (प्रति 100 ग्राम)।

अनाज	कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	प्रोटीन (ग्राम)	वसा (ग्राम)	राख (ग्राम)	कुल पथ्य रेशे (ग्राम)	उर्जा (किलो कैलोरी)
ज्वार	67.7	10.0	1.7	1.39	10.2	342
बाजरा	61.8	11.0	5.4	1.37	11.5	361
रागी	66.8	7.2	1.9	2.04	11.2	328
कंगनी	60.9	12.3	4.3	2.6	10.5	349
कुटकी	65.5	10.13	3.9	1.34	7.7	329
चेना	70.4	12.5	1.1	2.7	11.2	354
कोदो	66.2	8.9	2.55	1.72	6.4	309
सांवा	65.5	6.2	4.4	1.3	9.9	400

पशु चिकित्सा पेशे में विविधता, समानता और समावेशिता का महत्व

» डॉ. बलेश्वरी दीक्षित
» डॉ. मनु दीक्षित
» डॉ. धर्मेंद्र सिंह
» डॉ. अंजनी कुमार मिश्रा

पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशु पालन महाविद्यालय, रीवा

विश्व पशु चिकित्सा दिवस पहली बार 29 अप्रैल, 2000 को विश्व पशु चिकित्सा संघ द्वारा मनाया गया था। तब से यह हर साल अप्रैल के आखिरी शनिवार को मनाया जाता है, जिसमें पशु चिकित्सा के एक विशिष्ट पहलू को उजागर करने के लिए हर साल एक अलग विषय चुना जाता है। यह दिन समाज में पशु चिकित्सकों के महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार करने और उनकी सराहना करने और पशु चिकित्सा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने का एक मूल्यवान अवसर प्रदान करता है। दुनिया भर के पशु चिकित्सा संघों और संगठनों द्वारा आयोजित समारोहों और कार्यक्रमों के अलावा,विश्व पशु चिकित्सा संघ व्यक्तियों या संगठनों को सम्मानित करने के लिए विश्व पशु चिकित्सा दिवस पुरस्कार भी प्रस्तुत करता है, जिन्होंने पशु चिकित्सा और पशु कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस वर्ष विश्व पशु चिकित्सा दिवस 2023 की विषय पशु चिकित्सा पेशे में विविधता, समानता और समावेशिता को बढ़ावा देना है। विविधता, समानता और समावेश एक शब्द है जिसका उपयोग उन नीतियों और कार्यक्रमों का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो अलग-अलग उम्र, नस्ल और जातीयता, क्षमताओं और अक्षमताओं, लिंग, संस्कृतियों और यौन अभिविन्यास के लोगों सहित व्यक्तियों के विभिन्न समूहों के प्रतिनिधित्व और भागीदारी को बढ़ावा देते हैं।

विविधता: विविधता में वे सभी तरीके शामिल हैं जो लोग अलग हैं, विभिन्न विशेषताएं जो एक समूह या व्यक्ति को दूसरे से अलग बनाती हैं। विविधता में नस्ल और जातीयता, यौन अभिविन्यास, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, लिंग पहचान, धर्म, भाषा, आयु, वैवाहिक स्थिति, वयोवृद्ध स्थिति, मानसिक क्षमता, शारीरिक क्षमता और विकलांग लोग शामिल हैं।

हिस्सेदारी: हिस्सेदारी मुख्यत: निष्पक्ष और न्यायपूर्ण प्रथाओं को संदर्भित करता है, जो सभी को सफल होने और बढ़ने के लिए पहुंच, संसाधन और अवसर प्रदान करता है। समानता का उद्देश्य सभी को सफल होने के लिए समान अवसर देना है, चाहे उन्हें इसकी आवश्यकता हो या नहीं, जबकि इक्विटी या सामान हिस्सेदारी लोगों को सफल होने के लिए आवश्यक समान अवसर प्रदान करती है। हम सभी अलग हैं और यह अंतर सभी को महत्वपूर्ण बनाता है, एवं कार्यस्थल में समानता देने का मतलब इसी को अपनाकर सामान अवसर देना है।

समावेश: समावेशन का मतलब एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देना है जहां लोग पूरी तरह से भाग लेने के लिए स्वागत, सहज, सम्मानित, समर्थित और महत्वपूर्ण महसूस करते हैं। एक समावेशी कार्य वातावरण का उद्देश्य सभी कर्मचारियों को भाग लेना और योगदान देना है। यह सभी बाधाओं, भेदभाव और असहिष्णुता को दूर करने का भी प्रयास करता है।

पशु चिकित्सा चिकित्सा में विविधता का अभाव है, और यह पेशे की दीर्घकालिक प्रासंगिकता के लिए खतरा है। पशु चिकित्सा कार्यबल में विविधता बढ़ाने के लिए, पशु चिकित्सा विद्यालय में प्रवेश पाने के इच्छुक योग्य आवेदकों के अधिक विविध पूल को भर्ती करने और प्रोत्साहित करने के लिए सामूहिक पहल होनी चाहिए।

सामाजिक-आर्थिक विषमताएं, खराब करियर प्रोत्साहन की धारणा, जानवरों के साथ काम करने की नकारात्मक छवि, इन करियर का अपर्याप्त ज्ञान, गैर-सहायक वातावरण, जानवरों के आसपास सीमित या नकारात्मक अनुभव, नस्लीय भेदभाव, पूर्वाग्रह और सक्रिय बहिष्करण आदि पशु चिकित्सा तथा अन्य कई जानवरों से संबंधित करियर पेशों में अल्पसंख्यक रुचि तथा लोगों के कम रुझान का कारण हो सकते हैं

विविधता, इक्विटी और समावेशन (डीईआई) का महत्व: छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों की विविधता का शैक्षिक प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और कार्यक्रमों और स्नातकों की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

जैव विविधता और मानव विविधता: जैव विविधता एक क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी विभिन्न प्रकार के जीवन हैं-विभिन्न प्रकार के जानवर, पौधे, कवक, और यहां तक कि बैक्टीरिया जैसे सूक्ष्मजीव जो हमारी प्राकृतिक दुनिया बनाते हैं। इनमें से प्रत्येक प्रजाति और जीव संतुलन बनाए रखने और जीवन का समर्थन करने के लिए एक जटिल वेब की तरह पारिस्थितिक तंत्र में एक साथ काम करते हैं। जैव विविधता प्रकृति में हर उस चीज़ का समर्थन करती है, जिसकी हमें जीवित रहने के लिए आवश्यकता है। पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन जूनोटिक रोग का कारण बन सकता है और अन्य जानवरों की प्रजातियों में तेजी से फैल सकता है। लोगों में ज्ञात संक्रामक रोगों का लगभग 60 प्रतिशत और सभी (पुन:) उभरते हुए संक्रामक रोगों का 75 प्रतिशत जानवरों में शुरू होता है और लोगों में फैल जाता है।

किसी भी संगठन में डीईआई के लोकाचार का विकास करना, बोर्ड के सदस्यों, कर्मचारियों और समुदाय के सदस्यों वाली एक समिति का गठन करें जो डीईआई को संगठन के मिशन और कार्यों को सबसे आगे रखे। विविध पृष्ठभूमियों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों को संगठन के बोर्ड में भर्ती किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कई दृष्टिकोणों और अनुभवों पर विचार करते हुए नेतृत्व संबंधी निर्णय लिए जाएं। सुनिश्चित करें कि परिसर विकलांग लोगों के लिए स्वागत योग्य और अनुकूल है। लिंग-तटस्थ शौचालय प्रदान करें।

पशुओं के आहार में धनायन-ऋणायन संतुलन

» डॉ. शानू देवी सिंगौर
» डॉ. सुनील नायक
» डॉ. अंकुर खरे
» डॉ. राहुल शर्मा
» डॉ. अंचल केसरी
» डॉ. निर्मला मुवेल
» डॉ. शिवांश तिवारी
» डॉ. चमर्ति ज्योति
» डॉ. याशिर आमीन राथेर
» डॉ. ब्रजमोहन सिंह धाकड़

पशु पोषण विभाग, पशुचिकत्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे.प.वि.वि. जबलपुर (म. प्र.)

कुक्कुट विज्ञान विभाग, पशुचिकत्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे.प.वि.वि. जबलपुर (म. प्र.)

पशुचिकत्सा जनस्वास्थय और महामारी विज्ञान विभाग, पशुचिकत्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे. प.वि.वि.जबलपुर (म. प्र.)

पशु पालन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और देश के सामाजिक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह बड़ी संख्या में किसानों को रोजगार प्रदान करता है और इस तरह उनके जीवन स्तर को बढ़ाता है। देश के अधिकतर पशुओं को उनकी आवश्यकता के अनुसार पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता हैं। देश मे आहार की कमी के साथ-साथ इसकी गुणवता में भी कमी। पशुओं को खिलाने के लिए अधिकतर किसान सूखे चारे का प्रयोग करते हैं जिससे प्रोटीन, ऊर्जा प्रदान करने वाले तत्व, खनिज पदार्थ व विटामिन की कमी होती हैं। जब पशु के शरीर में एक तत्व का अधिक या कम मात्रा होना, तो यह उसकी स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे आहार पर पाले पशुओं में कई तत्वों की कमी के कारण वृद्धि दर में कमी, परिपक्वता में देरी, गर्मी में समय पर न आना, दो ब्यातों के बीच अधिक अंतर, प्रजनन में कमी आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। और मेटाबोलिक बीमारिया जैसे दूध के बुखार (मिकल फीवर), कीटोसिस है, जिससे खाने की क्षमता, दूध उत्पादन में कमी ला सकती है इन सभी समस्याओं का निर्वाण हेतु पशुओं को ऐसा संतुलित पशु आहार खिलाना चाहिए जिसमे सभी पोषक तत्व उचित मात्रा व अनुपात होते है। पशुओं में कैल्शियम, फैसिलियम, सोडियम और खनिज तत्वों के मध्य में एक संतुलन होना महत्वपूर्ण है।

संतुलित पशु आहार कैसा हो: संतुलित पशु आहार रूचिकर होना चाहिए। पेट भरने की क्षमता रखता हो। सस्ता, गुणकारी, उत्पादक तथा बदबू और फफूंद रहित होना चाहिए। वह आफरा ना करता हो,दस्तावार भी न हो आहार में हरे चारे का समावेश हो। खनिज, हड्डी के निर्माण से लेकर इलेक्ट्रोलाइट संतुलन तक सभी जैविक प्रक्रियाओं में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं। खनिज, घनायन और ऋणायन के रूप में आहार में पाये जाते हैं और आहार में खनिजों का सही अनुपात, विशेष रूप से जानवरों के उत्पादन के लिए घनायन और ऋणायन के बीच संतुलन आवश्यक होता है। पशुओं के आहार में धनायन-ऋणायन संतुलन खाने में प्रवर्तित होने वाले धनायन और नकारात्मक (एनियोन) के संतुलन को सम्बन्धित करते हैं। यह संतुलन पशुओं के एसिड-बेस संतुलन और उनकी मेटाबॉलिज्म पर गहरी प्रभाव डालता है। महत्वपूर्ण धनायन पशु के शरीर में शोडियम, पोटैशियम, कैल्शियम ओर महत्वपूर्ण ऋणायन क्लोरीन बिकार्बोनाट, फास्फेट है

कृषि महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सीखे उद्यानिकी फसलों की तकनीक

पन्ना। गत दिनों कृषि कॉलेज पन्ना के प्रथम वर्ष प्रथम सेमेस्टर के छात्र, छात्राओं की फंडामेंटल ऑफ हार्टीकल्चर विषय का प्रायोगिक कार्य ग्राम जनकपुर स्थित जिला उद्यानिकी विभाग की नर्सरी में कराया गया। प्रायोगिक कार्य में उपस्थित छात्र, छात्राओं को ग्राफ्टिंग एवं नर्सरी प्रबंधन से संबंधित प्रायोगिक कार्य कराए गए। उक्त कार्य संजीत बागरी प्रभारी उद्यानिकी नर्सरी जनकपुर द्वारा कराया गया। उक्त कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालय पन्ना के अधिष्ठाता, डॉ. वीके यादव व वैज्ञानिक डॉ. आरपी सिंह, बालेन्द्र सिंह, अतुल पांडेय उपस्थित रहे।

सनई ऊंचा, उड़द और मूंग का अधिक होता है प्रयोग

रसायन मुक्त खेती के लिए हरी खाद के लिए सनई या ढैंचा बोएं

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीएस किरार, वैज्ञानिक, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. एसके सिंह, डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. आईड. सिंह और जयपाल छिगारहा द्वारा द्वारा किसानों को रसायन मुक्त खेती के लिए हरी खाद के लिए सनई या ढैंचा की फसलों की बोवनी करने की सलाह दी गई। हरी खाद के लिए हमारे पूर्वज भी सनई या ढैंचा की फसल बोवनी कर भूमि की उर्वराशक्ति और उत्पादकता को बढ़ाते थे। हमारे यहां कृषि में दलहनी फसलों का महत्व सदैव रहा है। दलहनी एवं गैर दलहनी फसलों को उनके वानस्पतिक वृद्धि के समय जुताई करके उपयुक्त पर सड़ने (अपघटन) के लिए मिट्टी में दबाना ही हरी खाद कहलाता है। इससे मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है। ये फसलें अपनी जलग्रांन्थियों उपस्थित सहजीवी जीवाणुओं द्वारा वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन को सोखकर भूमि में एकत्र करती हैं। हरी खाद के लिए प्रयुक्त होने वाली प्रमुख फसले दलहनी फसलों में ढेंचा, सनई, उड़द, मूंग, अरहर, चना, मसूर, मटर, लोबिया, मोठ, खेसारी तथा कुल्थी मुख्य हैं। लेकिन जायद में हरी खाद के रूप में अधिकतर सनई ऊंचा, उड़द एवं मूंग का प्रयोग अधिक होता है।

हरी खाद के लिए फसलों में निम्न गुणों का होना आवश्यक है -

- » दलहनी फसलों की जड़ों में उपस्थित सहजीवी जीवाणु ग्रंथियां (गाठे) वातावरण में मुक्त नाइट्रोजन को यौगिकीकरण द्वारा पौधों को उपलब्ध कराती हो।
- » फसल शीघ्र वृद्धि करने वाली हो। हरी खाद के लिए ऐसी फसल होनी चाहिए जिसमें तना, शाखाएं और पत्तियों कोमल एवं अधिक हां ताकि मिट्टी में शीघ्र अपघटन होकर अधिक से अधिक जीवांश तथा नाइट्रोजन मिल सके।
- » चयनित फसलें मूसला जड़ वाली होनी चाहिए ताकि गहराई से पोषक तत्वों का अवशोषण हो सके।

हरी खाद के लाभ

- » हरी खाद केवल नत्रजन व कार्बनिक पदार्थों का ही साधन नहीं है, बल्कि इससे मिट्टी में कई पोषक तत्वों की पूर्ती भी होती है।
- » हरी खाद के प्रयोग से मृदा की भौतिक दशा में सुधार होता है जिससे वायु संचार अच्छा होता है एवं जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है।
- » अम्लीयता / क्षारीयता में सुधार होने के साथ ही मृदा क्षरण भी कम होता है।
- » हरी खाद के प्रयोग से मृदा में सूक्ष्मजीवों की संख्या एवं क्रियाशीलता बढ़ती है तथा मृदा की उर्वरा शक्ति एवं उत्पादन क्षमता भी बढ़ती है।
- » हरी खाद के प्रयोग से मृदा से पोषक तत्वों की हानि भी कम होती है।
- » हरी खाद के प्रयोग से मृदा जनित रोगों में कमी आती है।
- » यह खरपतवारों की वृद्धि भी रोकने में सहायक है।

पशु चिकित्सा दिवसः शिविर में किया गया 180 पशुओं का निःशुल्क उपचार

इंदौर। जागत गांव हमार

इंदौर में विश्व पशु चिकित्सा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पशु चिकित्सकों ने मिलकर 181 पशुओं का निःशुल्क उपचार किया। आज संभागीय पशु चिकित्सालय स्नेहलतागंज इन्दौर में पशुपालन विभाग एवं प्रान्तीय राजपत्रित पशु चिकित्सक संघ इन्दौर द्वारा विशाल निःशुल्क पशु चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। शिविर का विधिवत उद्घाटन संयुक्त संचालक पशु चिकित्सा डॉ. नरेन्द्र कुमार बामनिया, उप संचालक पशु चिकित्सा, डॉ.अशोक कुमार बरेठिया तथा डॉ. अनिल कुमार असाटी एवं डॉ.डीपी द्विवेदी की उपस्थित में हुआ।

शिविर में निःशुल्क उपचार, टीकाकारण, जांच (एक्स-रे एवं सोनोग्राफी) रक्त के नमूने की जांच की गयी। शिविर में कुल 181 पशुओं का उपचार किया गया। शिविर में 121 पशुओं को रेबिज के टीके लगाए गए। पशुओं की 07 एक्स-रे एवं 03 सोनोग्राफी की गई। शिविर में उपस्थित पशुपालकों को पशु पालन, पशु पोषण एवं पशु में होने वाले रोग एवं बचाव के संबंध में विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा परामर्श दिया गया।

शिविर में उपस्थित सभी पशु चिकित्सकों का संयुक्त संचालक डॉ.नरेन्द्र कुमार बामनिया एवं उप संचालक डॉ.अशोक कुमार बरेठिया द्वारा उत्साहवर्धन किया गया। भविष्य में ऐसे सकारात्मक कार्य करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया गया। प्रांतीय राजपत्रित पशु चिकित्सक संघ इंदौर के अध्यक्ष डॉ.अमृतलाल शर्मा द्वारा शिविर में उपस्थिति सभी पशु चिकित्सकों का शिविर के सफल आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया गया।

संस्कारधानी के अन्नदाताओं को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले बीज प्राप्त हों

जबलपुर। जागत गांव हमार

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर में गत दिवस एक खरीफ फसल 2023 समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि क्षेत्र के किसानों को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले बीज प्राप्त हों और वे अपनी फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए तैयार हों।

इस कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रो पीके मिश्रा जेएनकेवीवी ने फसल योजना और गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए फसल उत्पादन गतिविधियों की समयबद्ध योजना, कार्यान्वयन और निगरानी की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने फसल उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आजीविका में सुधार करने में गुणवत्ता वाले बीजों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। इसमें जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के कुलपति और वरिष्ठ अधिकारी एवं विश्वविद्यालय फार्म प्रबंधकों और प्रभारी ने भाग लिया।

कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर में गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन प्रशिक्षण के लिए बैठक में वैज्ञानिकों ने दिया सुझाव

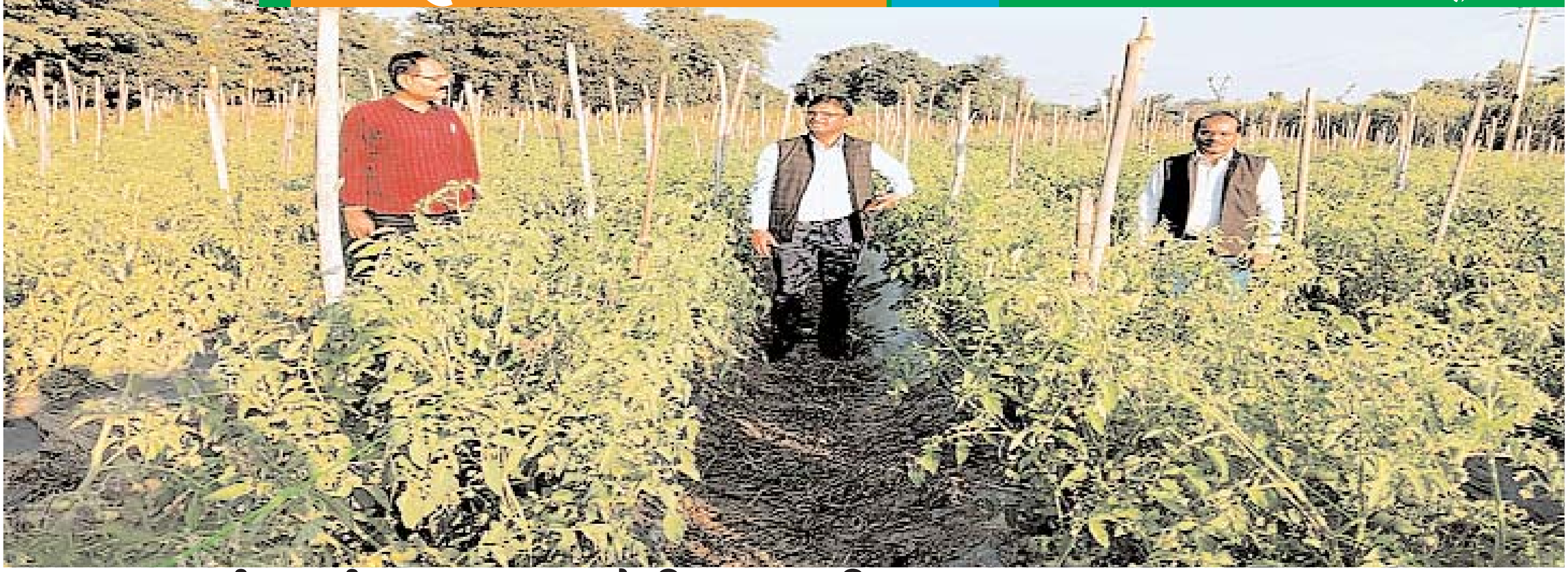

ग्रीष्मकालीन टमाटर उत्पादन के लिए समसामायिक सलाह

टीकमगढ़ में टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी इसे तीनों मौसम में उगा सकते हैं किसान

टीकमगढ़।

कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार, वैज्ञानिक, डॉ. एसके सिंह, डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. एसके जाटव, डॉ. आईडी सिंह एवं जयपाल छिगारहा द्वारा बताया गया कि टीकमगढ़ जिले में टमाटर एक लोकप्रिय सब्जी फसल है। इस फसल को सम्पूर्ण भारत वर्ष में उगाया जाता है। टमाटर में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, आयरन एवं अन्य खनिज लवण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहते हैं। इसके फल में लाइकोपिन नामक पिगमेंट पाया जाता है। जिसे विश्व का सबसे महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेन्ट माना गया है। ताजे फल के अतिरिक्त टमाटर को परिरक्षित करके चटनी, जूस, आचार, सॉस, केचप, प्यूरी, आदि के रूप में उपयोग में लाया जाता है। टमाटर की अच्छी पैदावार के लिए तापमान का बहुत बड़ा योगदान रहता है। टमाटर के लिए आदर्श तापमान 25-35 डिग्री सेंटीग्रेड उपयुक्त होता है। यह मुख्य रूप से खरीफ, रबी एवं जायद तीनों मौसम में उगाया जाता जा सकता है। गर्मी में उपयोग की जाने वाली प्रजातियां -स्वर्णा नवीन, स्वर्णा लालीमा, काशी अमन, काशी विशेष संकर किस्म स्वर्णा वैभव, स्वर्णा सम्पदा, काशी अभिमान मुख्य रूप से हैं।

खाद और उर्वरक का संतुलित मात्रा में करें प्रयोग

टमाटर में खाद एवं उर्वरक का संतुलित मात्रा में प्रयोग किया जाना अति आवश्यक होता है। सामान्य तौर पर 20-25 टन गोबर या कम्पोस्ट की खाद, 100-120 किग्रा नत्रजन, 60-80 किग्रा फास्फोरस एवं 50-60 किग्रा पोटाश की आवश्यकता प्रति हेक्टेयर पड़ती है। नत्रजन की एक तिहाई तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई से पूर्व तथा नत्रजन की शेष मात्रा दो बराबर भागों में विभाजित कर 25-30 एवं 50-55 दिनों के अंतराल पर खड़ी फसल में टॉप ड्रेसिंग के रूप में दिया जाना चाहिए। ग्रीष्मकालीन फसलों को 5-7 दिन के अंतराल पर एवं शरद कालीन फसलों में 10-15 दिन के अंतराल पर अथवा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। इस बात का पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए कि फसल में जलजमाव या पानी की अधिक मात्रा होती है तो उकठा एवं विषाणु जनित रोग की संभावना बढ़ जाती है। फसल की पैदावार लेने के लिए पौधों के आसपास निंदाई एवं गुड़ाई करें एवं पौधों के जड़ के पास मिट्टी आवश्य चढ़ा दें, जिससे पौधों की बढ़वार अच्छी हो। असीमित बड़वार वाली प्रजाति के पौधों को लकड़ी, तार एवं रस्सी के द्वारा सहारा प्रदान करना चाहिए, जिसके कारण फल मिट्टी के संपर्क में न होने से विभिन्न रोगों का प्रभाव स्वतः कम हो जाता है। टमाटर की फसल में खरपतवारों के अतिरिक्त बहुतायत नाशीजीवों जैसे कवक, जीवाणु, विषाणु, सूत्रकृमि एवं विभिन्न प्रकार के हानिकारक कीटों का प्रकोप देखने को मिलता है। सभी हानिकारक नाशीजीव फसल उत्पादन क्षमता को प्रभावित करते हैं।

फसल संरक्षण

» फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें एवं इस बात का ध्यान रहे कि जलजमाव न हो।

» सफेद मक्खी एवं थ्रिप्स के प्रकोप से पत्तियां ऊपर की तरफ सिकुड़ जाती हैं, इसके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल का 0.5 मिली/ली पानी की दर से छिड़काव करें।

» रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर मिट्टी में दबा देना चाहिए।

अगेती झुलसा रोग

इसमें पत्तियों एवं फलों में गहरे भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं, जिसके कारण टमाटर की फसल पूर्ण रूप से नष्ट हो सकती है, इसके नियंत्रण के लिए डाइथेन एम 45 का 2.5 ग्रा/ली. या कार्बोक्सिन + मैंकोजेब 2 मिली/ली की दर से छिड़काव करें।

फल छेदक

ये कीट टमाटर का सबसे बड़ा शत्रु है। पत्तियों एवं फूलों को खाने के बाद फलों में छेद कर अंदर खाना प्रारंभ कर देते हैं। इसके नियंत्रण के लिए प्रोफेनोफास 2 मिली/ली की दर से छिड़काव करें।

कद्दूवर्गीय सब्जियों की समसामायिक जानकारी

कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती किसान गर्मी और बरसात के मौसम में करें

पन्ना। जागत गांव हमार

कद्दूवर्गीय सब्जियों को मानव आहार का एक अभिन्न अंग माना गया है। इन्हें बेल वाली सब्जियों के नाम से भी जाना जाता है इनकी खेती गर्मी एवं वर्षा कालीन दोनों मौसम में की जा सकती है, जैसे लौकी, खीरा, गिल्की, कद्दू, तोरई, करेला की खेती गर्मी के मौसम में सफलतापूर्वक की जा सकती है। पोषण की दृष्टिकोण से यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कद्दूवर्गीय सब्जियों की उपलब्धता वर्ष में आठ से दस महीने तक रहती है, इनको सलाद, पककर, मीठे फल के रूप में मुख्य रूप से उपयोग किया जा सकता है।

ज्यादातर बेल वाली सब्जियों के लिए 80 किग्रा नत्रजन, 50 किग्रा फास्फोरस तथा 50 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर प्रयोग किया जाना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बोवनी से पूर्व उपयोग की जाती है, नत्रजन की शेष आधी मात्रा को 20-25 दिन एवं 40 दिन की अवस्था में दें। कद्दूवर्गीय फसल ज्यादातर 90-100 दिन की फसल होती है, गर्मियों में सिंचाई 6-7 दिन के अंतराल पर करना चाहिए। फलों की तुड़ाई कच्चे व मुलायम अवस्था में करें। फलों को डंठल सहित तोड़ने के बाद रंग व आकार के आधार पर श्रेणीकरण करें।

कीट एवं रोग नियंत्रण- कद्दूवर्गीय फसल में लाल पंपकिन बिटल (कद्दू का लाल

कीड़ा) का प्रकोप होता है, जो पत्तियों को प्रारंभिक अवस्था में नुकसान पहुंचाता है। इसके नियंत्रण के लिए 4 लीटर पानी में 250 ग्राम राख, 100 ग्राम चूना मिलाकर छिड़काव करें या इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिली/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

फलमक्खी

फलमक्खी सुरंग बनाकर गूदे का खाना प्रारंभ कर देते हैं, जिसके कारण फल सड़ने लगता है, इसके नियंत्रण हेतु बीटा-साइफलुथ्रिन + इमिडाक्लोप्रिड 80-100 मि.ली./एकड़ या 15 ली. पानी में 10-12 मि.ली. दवा की दर से छिड़काव करें।

चूर्णी फफूंद

इस रोग में पत्तियों एवं फलों पर सफेद चूर्ण दिखाई देता है, जिससे पौधा भोजन निर्माण नहीं कर पाता है इसके नियंत्रण हेतु सल्फर पाउडर का चूर्ण 25 कि.ग्रा./हे. की दर से छिड़काव करें।

मान सिंह देशी बीजों को दे रहे सम्मान

प्राकृतिक खेती का कमाल, बारिश और ओले से भी नहीं हुआ नुकसान

नर्मदापुरम। जागत गांव हमार

प्राकृतिक कृषि के चमत्कार कुछ दिन से अत्यधिक वर्षा एवं ओले पानी गिरने से मध्यप्रदेश में अधिकांश किसानों की फसल बर्बाद हो चुकी है। किसानों की कमर टूट गई है, लेकिन नर्मदापुरम में प्राकृतिक खेती करने वाले किसान मानसिंह गुर्जर के अनुसार उनकी फसल को कोई नुकसान नहीं हुआ है। उनका कहना है कि ये प्राकृतिक कृषि का चमत्कार है। फसल में ना कोई रोग लगा ना कोई नुकसान हुआ। फसल स्वस्थ्य खड़ी है। मान सिंह कहते हैं कि यह चमत्कार सिर्फ सिर्फ प्राकृतिक कृषि के हैं। गौ माता के गोबर-गौमूत्र से बने वीजामृत जीवामृत धनजीवामृत एवं दूध एवं हल्दी के स्प्रे के चमत्कार है।

कृषि यंत्रों की विशेषता, लाभ और उपयोग

किसान सही कृषि यंत्र का चुनाव करके अपनी खेती के काम को बनाएं आसान

खेत की तैयारी से लेकर मंडी में फसल ले जाने तक में ट्रैक्टर की होती है अहम भूमिका

भोपाल। जागत गांव हमार

रबी फसलों की कटाई पूरी हो चुकी है और किसान खरीफ फसलों की बोवनी के लिए खेत तैयार करेंगे। ऐसे में किसानों को खेत की तैयारी से लेकर बीज बोवनी, खाद व उर्वरक देने के काम में आने वाले कृषि यंत्रों की आवश्यकता होती है। खरीफ फसलों की खेती के लिए जिन कृषि यंत्रों की जरूरत होती है इसकी जानकारी होना बेहद जरूरी है, जिससे किसान भाई सही कृषि यंत्र का चुनाव करके अपनी खेती के काम को आसान बना सकें।

अधिकांश काम निपटाएगा ट्रैक्टर- खेती के लिए ट्रैक्टर प्रमुख कृषि मशीनरी है। इससे खेती के अधिकांश काम निपटाए जा सकते हैं।

खेत की तैयारी से लेकर मंडी में फसल ले जाने तक में ट्रैक्टर की अहम भूमिका रहती है। इसलिए किसानों के लिए ट्रैक्टर काफी महत्वपूर्ण कृषि मशीनरी है। ट्रैक्टर से जोड़कर कई प्रकार के कृषि यंत्र जैसे -कल्टीवेटर, रोटावेटर आदि चलाए जा सकते हैं।

मिट्टी पलटने वाला हल (एमबी प्लाऊ)- एमबी प्लाऊ का उपयोग मिट्टी को पलटने के लिए किया जाता है। इसे खेत की प्राथमिक जुताई के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस यंत्र से खेत की गहरी जुताई की जा सकती है। इससे जुताई करने पर खरपतवार और फसल अवशेषों को नियंत्रित किया जा सकता है।

तवेदार हल (डिस्क प्लाऊ)- तवेदार हल जिसे डिस्क प्लाऊ के नाम से जाना जाता है। इस हल से कडी एवं घास व जड़ों से भरी भूमि की जुताई का काम आसानी से किया जा सकता है।

इसमें तवे होते हैं जिनके कारण ये खरपतवारों को काटता हुआ चलता है। चिकनी नमीयुक्त मिट्टी में भी इसे प्रयोग किया जा सकता है। तवों में लगे हुए स्केपर की वजह से इसमें गीली मिट्टी भी इसमें नहीं चिपक पाती है।

हैरो

हैरो खेत की जुताई के काम आने वाला एक कृषि यंत्र है। हैरो चलाने का मुख्य उद्देश्य

जमीन को भुरभुरा बनाना और भूमि की नमी को सुरक्षित रखना है। इसका प्रयोग बुवाई से तुरंत पहले किया जाता है ताकि बीजों की बुवाई करते समय खेत में खरपतवार नहीं रहें। ये दो प्रकार का होता है, पहला, तवेदार हैरो और दूसरा ब्लैड हैरो।

कल्टीवेटर

इसका प्रयोग खेत की जुताई के बाद खेत के

ढेलों को तोड़ने, मिट्टी को भुरभुरा बनाने एवं खेत में सूखी घास व जड़ों को ऊपर लाने के लिए किया जाता है। इस यंत्र के प्रयोग कतार में बोई गई फसलों की निराई के काम में भी किया जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं, पहला, स्प्रिंग टाइन कल्टीवेटर और दूसरा रिजिड टाइन कल्टीवेटर।

रोटावेटर

रोटावेटर प्रमुख ट्रैक्टर के साथ जोड़कर चलाए जाने वाला

कृषि यंत्र है जिसका प्रयोग सीड बैड तैयार करने में किया जाता है। इसके अलावा इसका इस्तेमाल मक्का, गेहूं, गन्ना आदि फसलों को काटने और मिलाने में मदद करने के लिए भी किया जाता है। एक रोटरी कल्टीवेटर मिट्टी के पोषण में सुधार और ईंधन लागत, समय और ऊर्जा को बचाने में आपकी मदद करता है।

पडलर

इस यंत्र की सहायता से खेत में मचाई का काम किया जाता है। जुताई के बाद खेत में 5-10 सेमी पानी भर कर इस यंत्र

की सहायता से मचाई की जाती है, जो धान की रोपा पद्धति के लिए जरूरी होता है। पडलर का उपयोग खरपतवारों को नष्ट करने के लिए किया जाता है। यदि खेत में पानी जमीन के अंदर ज्यादा रिसने लगे तो उसे कम करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। इसके अलावा धान के पौधों की रोपाई के लिए उपयुक्त परिस्थिति बनाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

प्लांटर

इस कृषि यंत्र का इस्तेमाल बीजों की बुवाई के लिए किया जाता है। इस यंत्र की सहायता से बीजों को एक निश्चित दूरी पर पंक्तियों में बुवाई की जा सकती है। इसमें अलग-अलग फसलों के बीजों के लिए अलग-अलग प्लेटों तथा स्प्रोकिटों का प्रयोग किया जाता है। इससे बीजों की बुवाई का काम बहुत ही कम समय में व्यवस्थित तरीके से पूरा किया जा सकता है।

सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल

सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल मशीन की सहायता से एक साथ कई कतारों में बीज की बुवाई की जा सकती है। यह यंत्र मिट्टी के अंदर गहराई तक बीज की बुवाई कर सकता है। इसकी यंत्र की सहायता से उचित दूरी पर बीजों की बोवनी की जा सकती है। इस मशीन की मदद से खेतों में बीज और उर्वरक एक निश्चित अनुपात में एक साथ खेत में बोये जा सकते हैं।

ट्रैक्टर चालित बीज एवं उर्वरक बोवनी यंत्र

यह कृषि यंत्र ट्रैक्टर के साथ चलाए जाने वाला

कृषि यंत्र है जो 7-13 कतारों में बीज की बोवनी कर सकता है। इस यंत्र के इस्तेमाल से बीज और खाद भूमि में उचित गहराई पर डाले जा सकते हैं। यह ट्रैक्टर की तीन प्वांइट लिंक के साथ जुड़ा हुआ होता है जिससे इसे चलाना सुविधा जनक हो जाता है।

पटवारी को सौंपे दस्तावेज फिर भी सम्मान निधि से वंचित एक सैंकड़ा से अधिक किसान

मानपुर। जागत गांव हमार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा भले ही किसानों को लाभ दिए जाने के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना प्रारंभ की गई है, लेकिन राजस्व विभाग के अधिकारी कर्मचारियों की लापरवाही के कारण जिले के कई किसान पात्र होने के बाद भी पीएम किसान सम्मान निधि से वंचित हो रहे है। इसका उदाहरण मानपुर हल्के के एक सैकड़ा के करीब किसान है। जिन्होंने अपने सारे दस्तावेज हल्का पटवारी को सौंप दिए हैं और हल्का पटवारी उन्हें भरोसा दिला रहा है कि उन्हें जल्द ही किसान सम्मान निधि मिल पाएगी। मगर कई किसानों को सालभर का वक्त बीतने के बाद भी सम्मान निधि मिल नहीं पाई है।

पीएम किसान सम्मान निधि के लिए भटक रहे मानपुर हल्का निवासी किसान रामस्वरूप सुमन, हरिओम माली, कमलेश माली, केदार मीणा, प्रदीप सुमन, बादाम सिंह गुर्जर, नरेश सुमन आदि ने बताया कि हल्का पटवारी को सभी जरूरी दस्तावेज सौंप दिए है और उन्हें कई बार इस संबंध में अवगत भी करा दिया है। लेकिन आज तक प्रधानमंत्री सम्मान निधि योजना की राशि खाते में नहीं आई है। किसानों का आरोप है कि पटवारी के द्वारा किसान सम्मान निधि का लाभ दिलाए जाने के नाम कुछ किसानों से सुविधा शुल्क भी वसूल ली गई है। मगर इसके बाद भी वे किसान सम्मान निधि से वंचित है। ऐसे में नाराज किसान इस परेशानी को जल्द जिला प्रशासन के समक्ष रखने की बात कह रहे हैं।

वैसे ऐसा हो नहीं सकता, लेकिन ऐसे किसान शिकायत लेकर आएंगे तो निश्चित रूप से इस मामले की जांच करवाते हुए करवाई जाएगी।

राघवेन्द्र सिंह कुशवाह
नायब तहसीलदार, वृत मानपुर

यह बोले किसान...

मेरी जमीन मानपुर हल्के में स्थित है। लेकिन मुझे किसान सम्मान निधि नहीं मिल रही है। जबकि इस संबंध में सारे जरूरी दस्तावेज पटवारी को सौंप दिए हैं। दस्तावेजों के साथ ही दो हजार रुपए बतौर सुविधा शुल्क भी पटवारी के द्वारा ले ली गई है। फिर भी सम्मान निधि नहीं मिल रही है।

केदार मीणा, किसान बहरावदा

कई किसान पात्र होने के बाद भी पीएम किसान सम्मान निधि से वंचित हो रहे हैं। कोई किसान एक साल से तो कोई छह माह से भटक रहा है। लेकिन इस परेशानी को कोई नहीं सुन रहा है। अब यह परेशानी जनसुनवाई में जाकर कलेक्टर साहब को बताएंगे।

हनुमान गोस्वामी, किसान, मानपुर

गौवंश का भूमिगत अंतिम संस्कार मप्र में अनिवार्य

भोपाल। मध्यप्रदेश में मृत गौवंश को लेकर सबसे बड़ी खबर सामने आई है। प्रदेश में अब गौवंश की गौसमाधि अनिवार्य कर दिया गया है। गौवंश का भूमिगत अंतिम संस्कार अनिवार्य कर दिया गया है। यह गौशालाओं में रहने वाले गौवंश के लिए अनिवार्य है। इस संबंध में सरकार ने आदेश जारी किए है। पंचायत विभाग ने सभी कलेक्टर्स को आदेश जारी किए।

कार्यालय नगर परिषद मनगवां
जिला रीवा (म.प्र.)

क्रमांक/269/सा.सू./2023 मनगवां दिनांक 04/05/2023

सार्वजनिक सूचना

समस्त आम नागरिकों को सूचित किया जाता है कि शासन लाडली बहना योजना जिसका ऑनलाईन पंजीयन निकाय द्वारा दिनांक 25.03.2023 से 30.04.2023 तक वार्ड क्रमांक 01 से 15 तक समस्त वार्डों में कैंप लगाकर एवं घर-घर जाकर कुल आवेदन 2382 हितग्राहियों का पंजीयन किया गया है। पंजीकृत हितग्राहियों की सूची कार्यालय के नोटिस वोर्ड पर चस्पा की गई है। अतः जिस किसी व्यक्ति को इस संदर्भ में आपत्ति हो तो दावा/आपत्ति दिनांक 01.05.2023 से 15.05.2023 तक स्वयं के मो. न. से ऑनलाईन दावा एवं आपत्ति दर्ज किया जा सकता है। किसी भी प्रकार की ऑफ लाइन दावा/आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी दिनांक 15.05.2023 के बाद किसी प्रकार की दावा/आपत्ति पेश नहीं की जावेगी।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर परिषद मनगवां जिला रीवा (म.प्र.)

केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा-कृषि राज्यों का विषय है, केंद्र सरकार कराती हैं फंड मुहैया

कृषि क्षेत्र की गति विधियों को सैटेलाइट के माध्यम से मॉनीटर करने के लिए कृषि मैपर एप लांच

आर्गेनिक-नेचुरल फार्मिंग का रकबा भी बढ़ रहा, अब खाद की नहीं खलेगी कमी

भोपाल। जागत गांव हमार

कृषि राज्यों का विषय है। वहीं केंद्र सरकार फंड का इंतजाम कर सकती है, योजनाएं बना सकती है और बनी योजनाओं को लेकर उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर सकती है, लेकिन परिणाम तभी आएगा। यह बात केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने खरीफ अभियान-2023 के लिए पूसा, नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में कही।

केन्द्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि, जब राज्यों की गति बढ़ेगी, राज्य अनेक प्रकार के नवाचार करने के साथ ही कृषि के समक्ष विद्यमान चुनौतियों का समय-समय पर समाधान करेंगे। केंद्र और राज्य सरकारों के साथ मिलकर काम करने की वजह से हम खाद्यान्न, दलहन-तिलहन के उत्पादन, उद्यानिकी, निर्यात सहित तमाम सेक्टरों में आज अच्छी अवस्था में खड़े हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि खेती मुनाफे की गारंटी दे। अगर ऐसा नहीं होगा तो आने वाली पीढ़ियां खेती के क्षेत्र में काम करने नहीं आएंगी और देश के सामने यह बड़ी चुनौती होगी, इसलिए जरूरी है कि खेती में ज्यादा से ज्यादा तकनीक का समर्थन भी बढ़े। केंद्र सरकार इस दिशा में लगातार प्रयासरत है। अनेक योजनाओं के माध्यम से नई तकनीकें किसानों तक पहुंचाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकारों को ऐसी स्कीम बनाना चाहिए, जिनसे क्रमबद्ध तरीके से पूरे राज्य में तकनीक पहुंच सकें। इसके साथ ही अनुसंधान की भी जरूरत है। वर्ष 2050 तक की चुनौती हम सबके सामने है, जब हमारी आबादी बढ़ेगी। दूसरा आज भारत जिस राजनीतिक परिदृश्य पर खड़ा है, उसमें हमारी जिम्मेदारी अपने देश की जनता के प्रति तो है ही, लेकिन दुनिया के बहुत से देश जो हमसे अपेक्षा करते हैं, उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने की जिम्मेदारी भी हमें पूरी करना है। इसलिए चाहे फोर्टिफाइड फसलों का सवाल हो, उत्पादकता बढ़ाने का या जलवायु परिवर्तन के दौर में उच्च ताप को सहन करने की शक्ति वाले बीजों की प्रचुरता का मामला हो, इन सब विषयों पर हमें एक साथ काम करने की आवश्यकता है। भारत सरकार इस दिशा में चिंतित भी है और गंभीर भी।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि पहले उर्वरक की उपलब्धता को लेकर विसंगतियों के कारण कई तरह की कठिनाइयां होती थीं। मैं इस बात का साक्षी हूं कि जब यूरिया की जरूरत होती थी, तो अनेक राज्यों के सांसदों के साथ हम लोग पार्लियामेंट में गांधीजी की प्रतिमा के सामने बैठे रहते थे, इसके बावजूद यूरिया की उपलब्धता नहीं होती थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ संकल्प के परिणामस्वरूप केंद्र सरकार ने इस दिशा में राज्य सरकारों के साथ मिलकर कई ठोस कदम उठाएं, यही कारण है कि पिछले सात-आठ वर्ष में इस तरह की विपरीत परिस्थितियां नहीं बनीं व व्यवस्थाएं ठीक प्रकार से चलती रही हैं। आज लगभग ढाई लाख करोड़ रुपए की सब्सिडी फर्टिलाइजर में जा रही है, इस पर विचार करने की जरूरत है। अगर यह सब्सिडी बचेगी तो कृषि सहित अन्य क्षेत्रों के विकास में यह पैसा काम आएगा। इस दृष्टि से पीएम प्रणाम जैसी योजनाएं सरकार संचालित कर रही है, जिससे राज्य इस दिशा में प्रेरित हों। वर्तमान में नैनो यूरिया, नैनो डीएपी भी आ गया है। इसकी पर्याप्त उपलब्धता है व उपयोग भी हो रहा है। दूसरी ओर आर्गेनिक व नेचुरल फार्मिंग का रकबा भी बढ़ रहा है, ऐसे में खाद की कोई कमी नहीं रहेगी।

सरकार डिजिटल एग्री मिशन पर काम कर रही

केन्द्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि वर्तमान में अच्छे बीजों की उपलब्धता, सिंचाई के साधन, बिजली की उपलब्धता आदि की वजह से अच्छे उत्पादन को देखकर खुशी होती है। वहीं अब कृषि का डाटा तैयार करने की दिशा में भी कदम बढ़ाते हुए भारत सरकार डिजिटल एग्री मिशन पर काम कर रही हैं, एग्रीस्टेक बनाया जा रहा है, ताकि राज्य और केंद्र सरकार एग्रीस्टेक के माध्यम से हर खेत को अपनी नजर से देख सकें। कौन-से खेत में, कौन-सी फसल हो रही है, कहां ज्यादा है-कहां कम। कहां बर्बादी है, कहां फायदा है, इसका अवलोकन कर सकेंगे। इसके आधार पर किसानों को सलाह दी जा सकेगी कि इस बार किस हिस्से में खेती करना है, कहां नहीं। दूसरा फायदा यह होगा कि अगर किसानों का नुकसान होगा तो एग्रीस्टेक का इस्तेमाल करके प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से नुकसान का आंकलन कर क्लेम राशि शीघ्र उसके खाते में पहुंच जाएगी। उर्वरक व पानी का अपव्यय रोकने लिए भी तकनीक की आवश्यकता है। इसमें राज्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, तभी हम अपना लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। जिस तरह से हम उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, राज्यों के स्तर पर विद्यमान विषयों पर भी समय-समय पर विचार किया जाना चाहिए। अगर राज्यों की तरफ से केंद्र के लिए कोई सुझाव आएंगे, तो उनका केंद्र सरकार स्वागत करेगी। हम सबका एक ही लक्ष्य है।

लाभ किसानों तक पहुंचाने का आग्रह किया

सम्मेलन में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि हमें इस तरह से काम करना चाहिए कि जब हमारी आजादी के 100 वर्ष पूर्ण हो, तो भारत विकसित राष्ट्र बनने के साथ ही कृषि क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बन सकें। नि:शुल्क बीज मिनीकिट वितरण में राज्यों को और कार्य करने की जरूरत है, ताकि अधिक से अधिक किसानों को इसका लाभ मिल सके। सचिव (उर्वरक) अरूण बरोका ने कहा कि खरीफ सीजन के लिए देश में पर्याप्त मात्रा में उर्वरक उपलब्ध है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव मनोज अहूजा ने केंद्र की योजनाओं के सुचारू संचालन में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से सहयोग का आग्रह किया। डेयर के सचिव व आईसीएआर के महानिदेशक हिमांशु पाठक ने जलवायु अनुकूल किस्मों का अधिकाधिक लाभ किसानों तक पहुंचाने का आग्रह किया।

मध्यप्रदेश में पशुओं की एंबुलेंस सेवा में रोड़ा बनी 18 फीसदी जीएसटी

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में गाय एवं अन्य पशुओं के इलाज के लिए चलने वाली एंबुलेंस अटक गई है। इसका कारण एंबुलेंस के लिए आउटसोर्स ऑफ मेनपॉवर के वेतन पर 18 फीसदी जीएसटी लगने को लेकर असमंजस हैं। इस संबंध में अब पशुपालन एवं डेयरी संचालनालय ने वाणिज्यकर विभाग से मार्गदर्शन मांगा है। जिसके जवाब का इंतजार किया जा रहा है। गौरतलब है कि एंबुलेंस का संचालन 1 अप्रैल 2023 से शुरू होना था। केंद्र सरकार के सहयोग से मध्य प्रदेश सरकार ने 406 एंबुलेंस खरीदी हैं। इन एंबुलेंस के संचालन की पूरी तैयारी हो गई है। पशुपालन विभाग प्रदेश में खुद एंबुलेंस का संचालन करेगा। एंबुलेंस के लिए डॉक्टर, पैरावेट और ड्राइवर कम सहायक आउटसोर्स किए जा रहे हैं। एंबुलेंस के संचालन का काम शुरू करने से पहले स्टाफ के वेतन पर 18 प्रतिशत जीएसटी का मामला फंस गया।

एक साल में आठ करोड़ जीएसटी

एक साल में आठ करोड़ रुपए जीएसटी बन रहा है। अब अधिकारियों के सामने असमंजस की स्थिति है कि प्रदेश में अपनाए जा रहे मॉडल पर जीएसटी लगेगा या नहीं। इसको लेकर विभाग की तरह से इंदौर स्थिति वाणिज्यकर विभाग के मुख्यालय से मार्गदर्शन मांगा गया है। विभाग एक महीने से जवाब का ही इंतजार कर रहा है। इसी के चलते पशुओं की एंबुलेंस सेवा शुरू नहीं हो पा रही है।

जीपीएस से मॉनीटिरंग| एंबुलेंस का संचालन की मॉनीटरिंग जीपीएस के माध्यम से की जाएगी। सभी 406 एंबुलेंस में जीपीएस की मैपिंग की गई है। इससे एंबुलेंस की लोकेशन पर कॉल सेंटर के माध्यम से ही नजर रखी जा सकेंगी।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 9425048589

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)